

प्रश्न - क

प्र०। निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए:-

उत्तर (क) 'परिष्ठ नागरिक' शब्द सुनते ही हमारे मन-मस्तिष्क में उन लोगों की छवि उभरती है जो प्रभु की कृपा और अपने माँ-बाप, गुरुजन और आदि के दीर्घायु होने के आशीर्वाद से मानव जीवन की पसंत बहार के 60-65 वर्ष व्यतीत कर चुके हैं। जब वे अपने बच्चों से दूर हो जाते हैं तब वे अकेले पड़ जाते हैं।

उत्तर (ख) वृद्ध जनों के षष्ठाकीपन को दूर करने के लिए उन्हें उनके बच्चों द्वारा अकेला नहीं छोड़ा जाना चाहिए। उन्हें उनकी अपने पास रखना चाहिए, उन्हें वृद्धाश्रम में न भेजकर अपने पास रखकर उनकी देखभाल करनी चाहिए, क्योंकि वृद्ध लोग केवल बच्चों का साथ चाहते हैं और कुछ नहीं।

उत्तर (ग) युवा वर्ग का उनके प्रति यह वर्तक्य है कि वे वृद्ध लोगों की हर जरूरत का ख्याल रखें उनके अकेला न छोड़कर उनका साथ दें, उनके लिए धन न भिजवाकर स्वयं उनकी देखभाल करें और उन्हें वृद्धाश्रम में न रखकर अपने घर पर रखें।

उत्तर (घ) स्वयंसेवी संस्थान और सरकार परिष्ठ नागरिकों के लिए वृद्धाश्रम खोल सकते हैं वहाँ पर उनका ध्यान रखा जा सके और उनके बुढ़ापे के दिन अच्छे बीत सकें और जहाँ उनका भाविष्य भी सुरक्षित हो, जिन लोगों ने एक युवा पीढ़ी देश, परिवार और



समाज को सँवारने का कार्य किया है उन्हें सहायतावस्था के समय अकेला छोड़ना अनुचित है और ये मानवोचित ही नहीं है।

उत्तर(ड) जिस पीढ़ी ने देश, समाज और परिवार को सँवारने में अपना सारा जीवन लगा दिया उन्हें सहायतावस्था में उन्हीं के बाल पर छोड़ना अन्याय है और मानवोचित नहीं है। क्योंकि बृद्ध लोग अपने बच्चों की पढ़ाने के लिए और उन्हें उनके जीवन में सफल बनाने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौंदावर कर देते हैं और युवा पीढ़ी द्वारा उनके प्रति ऐसा व्यवहार कष्टदेय होता है।

उत्तर(च) शीर्षक - 'वरिष्ठ जनों का समाज में योगदान'

2. (ii) निम्नालिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए :-  
उत्तर(क) कवि को कमल मीन करुणा के सहारे की अपेक्षा है।

(ख) यहाँ पर पूल का उदाहरण व्यक्ति की आयु से संबंधित है कवि कहना चाहता है की जीवन काल में इस प्रेम की अचवाशित सीसे कितनी महत्वपूर्ण है इसलिए वे आकाश का विस्तार करने के लिए पूल का उदाहरण दे रहा है।

(ग) भाग्य की लहरों की तुलना अनुधाराओं से की गई है क्योंकि यह अनुधारा सागर की

लहरो के आँते बहती हैं और समय आने पर यह अपना किनारा स्वयं ढूँढ़ लेती हैं।

(घ) कवि अपने आँखों का ऐसा प्रभाव देना चाहता है दूसरों की आँखों को भी नमित कर दे तथा उनकी आँखों में भी अश्रुओं की बाढ़ ला दे ऐसा प्रभाव देखना चाहता है।

(ङ) कवि कहता है की ये ऐसा प्रभोजन ठा है सभी दिशाएँ लुप्त गई हैं एक नाविक, एक तरणी और न जाने कितनी आपदाएँ हैं फ़सलिरु कावे मँझधार में किनारा चाहता है।

(पञ्च-ख)

3.

निबंध - महानगरों में बढ़ती अपराधवृत्ति

भूमिका :- देश के बड़े-बड़े महानगरों जैसे मुंबई, दिल्ली, कलकत्ता जैसे बड़े-बड़े महानगरों में अपराध बढ़ते ही जा रहे हैं लूटपाट, चोरी, बच्चों और महिलाओं से संबंधित अपराध आज समाज की रवा रहे हैं और अपराधी खुलेआम इन अपराधों को अंजाम दे रहे हैं जैसे उन्हें कानून व्यवस्था का कोई डर ही ना हो, उन्हें रोकने के लिए सरकार कानून तो बना रही है, परन्तु फिर भी कसपर कोई विशेष बल नहीं पड़ रहा है लोगों का जनजीवन दिनप्रतिदिन अय के घेरे में आता जा रहा है।

महानगरों में अपराध बढ़ने के कारण :- महानगरों में जैसे तो अपराध बढ़ने के कई

कारण हैं जैसे - युवा पीढ़ी का चित्त अटक जांना वे अपनी उम्र से पहले हर कार्य को करना चाहते हैं भले ही उसके परिणाम दुर्गामी हों, उनकी मानसिकता पर इस चीज का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

समय पर रोजगार उपलब्ध न होने के कारण भी वे अपने आपको परिवार पर बोझ समझने लगते हैं और वे चोरी, डकैती, लूटपाट जैसी घटनाओं को अंजाम देते हैं। वे कभी दूसरों की मनोस्थिति को नहीं समझ पाते।

समाज द्वारा युवा वर्ग को अपमानित करने के कारण था उन्हें मानसिक चोट देने के कारण भी वे अपराध करने पर उतार दिए जाते हैं आजकल सोशल मीडिया पर बढ़ता दुष्प्रचार दुष्प्रचार भी संगठित घटनाओं को बढ़ावा दे रहा है, लोग एक दूसरे का चरित्र धनन करने के लिए भी अश्लील स्म. स्म. स्म. वायरल कर देते हैं यह कारण महानगरों में अपराध बढ़ा रहे हैं।

सरकार द्वारा उचित कानून व्यवस्था में सुधारना करना :-

सरकार हर विषय पर बात करने के लिए तैयार हो जाती है जो बात उनके पक्ष में होती है परन्तु असमर्थ महानगरों में बढ़ते अपराध जैसी समस्या पर सरकार भी चुप्पी साध लेती है। वे कर्फ रबोखले आशवासन तो अवश्य देती हैं परन्तु कारवाही के नाम पर कुछ नहीं करती, अपराधियों को दण्ड देने के नाम पर पुलिस द्वारा उन्हें, कुछ ही घंटों में बेल दे दी जाती है। जिससे अपराधियों के मन में कानून व्यवस्था का कोई भय नहीं रह जाता और वे उससे भी संगठित अपराधों को अंजाम देती हैं। सरकार कानून व्यवस्था में परिवर्तन



कार्य

ग

पक्षि

अंश

मान

ल

दावा

रूम

1

पक्ष

देती

के

पराधि

की

रेवतन

करने के लिए तैयार हैं परन्तु कई विपक्षी दल उनके इन दलीलों का विरोध कर देते हैं और वे स्वयं अच्छे बनने के लिए भी ऐसी बिलों को संसद में पास नहीं होने देते, जिससे अपराधियों को लगता है, की यदि वे अपराध करेंगे भी तो भी वे बच जाएंगे।

महानगरों में बढ़ते अपराधों के आंकड़े :-

पिछले दो दशकों में महानगरों में अपराध बढ़ने की गति तीन गुना तेज हो गई है वर्ष 2018 की (ह्यूमन राइट्स वॉच) मानव अधिकार संगठन की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के दस सबसे अपराधिक शहरों में भारत के पाँच शहर शामिल हैं यहाँ तक की देश की राजधानी दिल्ली भी इन इन शहरों में सम्मिलित है, अंतराष्ट्रीय महिला स्वयं सहायता समूहों की रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रत्येक 5 मिनट में एक महिला बलात्कार जैसे घृणित अपराध का शिकार बनती है जिसमें 70% मामले पुलिस तक पहुँच नहीं पाते और अपराधियों को सजा प्राप्त नहीं होती। देश में कन्या श्रृण हत्या व ऐसी समस्या भी जन्म ले चुकी है जो 2011 की जनगणना के अनुसार - 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या केवल 850 ही रह गई है, यह आंकड़े हमें स्तब्ध कर देते हैं।

### निष्कर्ष निष्कर्ष

महानगरों में अपराध को रोकने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। कानून व्यवस्था को दृढ़ से लागू करना चाहिए, लोगों को अपराध के प्रति आवाज उठानी चाहिए, विपक्षी दलों को सरकार की आलोचना नहीं करनी चाहिए। यदि महानगरों में ऐसे ही

अपराध बढ़ते जायें तो एक दिन पूरी मानवता ही समाप्त हो जायगी। और लोग एक-दूसरे पर विश्वास न करकर संदेह करेंगे।

4. (ii) पत्र

सेवा में,  
पर्यावरण मंत्री,  
उत्तर प्रदेश, गाँव राजौरी,

विषय :- अपद्रव्य के बहवों से पेयजल के दूषित होना।

महोदय जी,

मैं इस गाँव का सरपंच अपने गाँव की ओर से राज्य के पर्यावरण मंत्री का ध्यान इस समस्या की ओर खींचने हेतु पत्र लिख रहा हूँ। महोदयजी, मेरे गाँव के निकट दूषित अपद्रव्य नदि में मिलने से पेयजल दूषित होता जा रहा है जिसके कारण ये जल अब पीने योग्य नहीं बचा है और न ही इस जल से कृषि की जा सकती है, दूषित जल ग्रहण करने के कारण गाँव में बहुत से लोग बीमार हो गए हैं हम, पहले भी कारखानों में दरखास्त कर चुके हैं की वे क्व अपद्रव्यों को जल में न बहाएँ और उनके विकास के लिए कोई उचित व्यवस्था करें, परन्तु इसका उनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

5  
उत्तर

उत्तर

लोग

मैं आशा करता हूँ, की आप <sup>हमारी</sup> इस समस्या पर अवश्य कारवाही करेंगे और  
मेरे विचारों पर ध्यान देकर मुझे कृतज्ञ करेंगे और कोई उचित उपाय निकालेंगे।

धन्यवाद

भवदीय,

नगर पंचायत

देवाशीश

तिथि - 9 मार्च, 2019

5.

प्रश्न/उत्तर

उत्तर (क) स्तंभ-लेखन से तात्पर्य है की जब कोई पत्रकार अपने लेखन में कितना अनुभव  
हो जाता की वे उससे संबंधित हर क्षेत्र में कार्य कर सके, उसे स्तंभ लेखन कहते हैं।  
स्तंभ लेखन का दायरा बड़ा व्यापक होता है और उन्हें अपने क्षेत्र से संबंधित हर  
विचार को लिखने की स्वतंत्रता होती है।

उत्तर (ख) विशेष-लेखन केवल कुछ विशेष घटनाओं पर ही लिखे जाते हैं, उन्हीं से संबंधित  
रिपोर्ट तैयार की जाती है। इसमें उन्हीं पत्रकारों को लिखने की अनुमति होती है जो  
इस शैली में व्याख्यान हो।



- उत्तर(घ) पूरा पूर्ण कालिक पत्रकार से तात्पर्य यह है जो पत्रकार स्वयं निश्चित शीर्षक लेकर उस पत्रिका में हमेशा कार्य करता रहे, उसे पूर्णकालिक पत्रकार कहते हैं।
- उत्तर(ङ.) शैक्षिकी की भाषा शैली में निम्नलिखित लोग भी फस सुन सकते हैं।
1. यह सरल और सहज भाषा होती है, जिसे आसानी से समझा जा सकता है।
  - 2.

6. (i)

अलिरव :- ( शहरों की ओर पलायन )

आज की ग्रामीण जीवन शैली में दिन-प्रतिदिन परिवर्तन आता जा रहा है। लोग रोजगार प्राप्ति हेतु शहर की ओर पलायन कर रहे हैं इससे शहरी और ग्रामीण दोनों ही जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है जैसे - भारत एक कृषि प्रधान देश है और गाँव कृषि की जड़ है यदि लोग गाँव छोड़कर शहर आने लगेंगे तो देश में खादियों का अकाल पड़ जायेगा और जनजीवन अधिक महंगा पड़ जायेगा इस दुर्गामी प्रभाव शहरों पर भी पड़ेगा क्योंकि यदि शहरी जनसंख्या कतनी तेजी से बढ़ेगी तो शहरी जीवन धर्म - खा जायेगा और वहाँ पर अपराध बहुत तेजी से बढ़ेंगे। गाँव में मूलभूत सुविधाओं के न होने के कारण और रोजगार के सीमित अवसरों के कारण भी लोग बाहर की ओर पलायन करते हैं, हमें गाँव के ग्रामीण जनजीवन में नियमित सुधार लाने होंगे और उन्हें मूलभूत सुविधाएँ देनी होंगी ताकि लोग शहरों की ओर पलायन न करें।



(व्यण्ट - ग)

7. सप्रसंग व्याख्या

(i) लघु

जहाँ किनारा।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक (अंतरा भाग-2) में संकलित श्री जयशंकर प्रसाद की काविता 'कार्नेलिया' के गीत से उद्धृत हैं, यह उनके नाटक चंद्रगुप्त के द्वितीय अंक से लिया गया है। इन पंक्तियों में सिकंदर के सेनापति सैलूक्स व्याख्या की पुत्री कार्नेलिया सिंधु नदी के तट पर भारत की विशेषताओं को बता रही हैं।

व्याख्या :- कवि इन पंक्तियों में कहता है की पक्षी अपने छोटे-छोटे पंखों के द्वारा दूर देश से भारत की ओर चले आ रहे हैं अर्थात् यहाँ पर इस देश में अज्ञान लोगों की भी आसानी से आश्रय प्राप्त हो जाता है, वे हवा के सहारे भारत देश की ओर ही मुख किए हुए हैं क्योंकि उन्हें वे देश अपना लगता है, जिस प्रकार बादल जल से बरसते हैं वैसे ही उसी प्रकार भारत के लोगों की आँखें भी करुणा जल से बरी रहती हैं जब यह है कि भारत के लोग कभी भी दूसरे व्यक्तियों को दुःखी नहीं देख सकते वे सदा दूसरों के प्रति दया का भाव रखते हैं, भारत तो ऐसा देश है जहाँ पर लहरों को टकराकर किनारा मिल जाता है अर्थात् यहाँ पर कहीं से भी आने वाले लोगों को आसानी से आश्रय प्राप्त हो जाता है।

विशेष :- 1. कार्नेलिया ने भारत के प्रति आधार प्रेम प्रकट किया है।

2. ब्रिड जीड - निज, और समीर-सहारे में अनुप्रास अलंकार हैं।

3. कविता में संगीतात्मकता है।  
4. भाषा सहज और सरल है।

8. प्रश्न / उत्तर

(क) उत्तर कवि का आशय है की बनारस में जब वसंत का आगमन होता है तो, भिरवारियों के चहरे पर एक अजीब सी चमक आ जाती है उनके कपड़ों का निचाट खालीपन दूर होकर उसमें भी एक चमक आ जाती है, भीख मिलाने के कारण उनके खाली कपड़े भर जाते हैं और उनमें भी वसंत उतर जाता है।

(ख) उत्तर भरतनेशम की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है :-

1. भरत कहते हैं की श्री राम तो अपराधी को भी क्षमा कर देते हैं, वे कभी किसी पर क्रोध भी नहीं करते हैं।
2. मुझपर तो उनकी विशेष कृपा रही है वे स्नान खेल में जान मूझकर स्वयं हार जाते थे और मुझे जिता देते थे।
3. मैं वे बहुत शांत और सौम्य स्वभाव के थे, मार्ग के साँप भी उन्हें देखकर अपना विष त्याग देते थे।

9. काव्य सौंदर्य

(ख) क

चलती

चली गई।

30

कावे कहता है जब वसंत का आगमन होता है तो सड़क पर बिंदी लाल खजरी पर  
पूरा से पीले पत्ते झड़ कर गिरते हैं और पाँव के नीचे आकर चुरमुआ जाते हैं अर्थात् वसंत  
के आगमन से पेड़ों पर नई कोंपले उग जाती हैं आम के वृक्ष और से भर जाते हैं और  
हवा में थोड़ी-थोड़ी गरमाहट महसूस होने लगती है, ऐसा लगता है जैसे सुबह दूध बने  
खिली हुई हवा बिंदुकी से अचानक आई फिरकी-सी गोल घूमकर चली गई।

इन पंक्तियों में कावे वसंत आगमन की बात कह रहे हैं, फिर-पत्ते में अनुप्रास  
अलंकार है, जैसे दूध बने गरम पानी से नहाई हो में उपप्रेक्षा अलंकार है, भाषा सहज  
और सरल है।

(घ)

तु झुली

प्रथम गीति

30

यहाँ कावे अपनी पुत्री सरोज के विवाह समय की स्मृति समर्पण कर रहा है। कावे कहता  
है की तू स्वक उच्छ्वास की तरह झुली और पूरे कारीर में समा गई, यह बात तेरी आँखों  
से नहीं तेरे श्रृंगार से मुखरित हो रही थी। यह तेरे पति के प्रति तेरे प्रगाढ़ प्रेम की प्रगट  
कर रहा था तेरा श्रृंगार तेरे अंग-अंग में समा रहा था और उसमें तेरे होंठ काँप रहे थे  
संकोच से झुकी तेरी आँखों में प्रेम साफ-साफ नज़र आ रहा था। मैंने देखा की मेरे  
गीतों का वसंत उस मूर्ति में साकार हो रहा है।

इन पंक्तियों में कावे ने अपनी पुत्री सरोज के अकरूपनीय श्रृंगार का वर्णन  
किया है।



2. नत-नैनी में अनुप्रास अलंकार है।
3. अंग-अंग, थर-थर-थर में पुनरुक्ति तत्काश अलंकार है।
4. भाषा सहज और सरल है।
5. कविता दृढ़ से युक्त है।

उत्तर

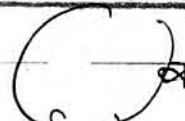
10. ~~संक्षेप व्याख्या:-~~

11. प्रश्न/उत्तर

(क) उत्तर बड़ी बहुरिया संवाद अपने मायके कसलिर पहुँचाना चाहती थी क्योंकि वह अपनी बड़ी हवेली जो की रक्कनाममात की बड़ी हवेली रह गई थी, वह वहाँ बहुत परेशान थी उसके पास खाने पीने के लिए कुछ न था, वे दाने दाने को मोहताज थी, वह बपुआ, साग खाकर अपना पेट भर रही थी उसे उधार न चुकाने के कारण सभी लोगों से झुनना पड़ता था कसलिर वह अपने मायके संवाद पहुँचाना चाहती थी। संवादिया अपना संवाद कसलिर नहीं सुना पाया क्योंकि वह बड़ी बहुरिया के मायके की स्थिति से भक्ति भाँति परिचित था। वह यहाँ कैसे रहेगी, वह आर्क-भाभियों की नौकरी कैसे करेगी, वे बड़ी बहुरिया की माँ की स्थिति देकर और भी परेशान हो जाता है, क्योंकि प्रकृति उनके माँव का अपमान था। क्योंकि वे उनकी लक्ष्मी को संभालकर न रख पाए, कसलिर संवादिया अपना संवाद न सुना पाया।

उत्तर(ख) जब लैखक कौशांबी में घूम रहा था। तब उसे अचानक एक स्वेत के मेड़ पर बौधिसत्व की एक सुंदर मूर्ति दिखाई दी, यह मथुरा के लाल पत्थर की थी और यह सबसे प्राचीन मूर्तियों में से एक थी, सिवाय सिर के पदस्थल तक यह मूर्ति सम्पूर्ण थी जब लैखक इस मूर्ति को स्वेत से उठाने लगा तो स्वेत में काम कर रही बुढ़िया चिल्लाने लगी और कहने लगी 'बड़े आरु मूर्ति उठाने वाले इसे हम निकलवाएँ' हैं, इसका नुकसान कौन भरेगा। लैखक उस समय साधारण वेश भूषा में था। इसलिए वे इतना सब कुछ कह पाई, वे जानता था की बुढ़िया लालची है इसलिए उसने उसे दो रुपये देने का प्रस्ताव दिया। बुढ़िया ने पैसे ले लिए और कहा "हम मना नाही करत" तुम ले जाओ। इस प्रकार लैखक बौधिसत्व की आठ मीटर ऊँची मूर्ति प्राप्त करने सफल हो गया, यह मूर्ति उसे उसके संग्रहालय के लिए चाहिए थी।

12. (11)



कावि परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

जन्म :- 1898-1961

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म बंगाल के मैघनीपुर जिले के मनशादल गाँव में हुआ। उनकी स्कूली शिक्षा केवल 9वीं कक्षा तक ही हो पाई। पत्नी की तैरणा के कारण उनकी रूचि कविता लेखन में बढ़ी। उनकी माँ का निधन बचपन में ही हो गया था। सन 1918 में उनकी पत्नी का निधन हो गया और अंत में पुत्री सरोज की मृत्यु ने

उन्हें अंदर तक झंझोर दिया।

काव्यगत विशेषता :- निरालाजी मुक्त चंद को प्रवर्तक कवि मनि जाते हैं उन्होंने 1916 में प्रसिद्ध कविता छुड़ी की कलि लिखी थी जिसके बाद उन्हें बहुत प्रसिद्धी मिली। उन्होंने 1922 में 'राम ठी कृष्ण मिशन' द्वारा प्रकाशित पत्रिका समनव्य का संपादन किया। वे 1923-24 में मत्तल मतवाला के संपादन मंडल से भी जुड़े हिंदी के स्वच्छंद आधार स्तंभ को जाने वाले निराला का काव्य संसार बहुत व्यापक है। भारतीय साहित्य विचारों का वैसा बोध उनकी कविताओं में आता है, वह बहुत कम कवियों की रचनाओं में देखने को मिलता है।

साहित्यिक परिचय :- निराला की प्रमुख काव्य कृतियां हैं- परिमल, गितिका, अर्चना, अराधना, गीतगुंज, बैला नरु नरुपति, तुलसीदास आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इसके अलावा उन्होंने उपन्यास भी लिखे जैसे 'अतिना की चाची' और 'विल्ले सुखखरिया' उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। उनके समस्त रचनाओं का संपादन 'निराला रचनावली' के नाम से आठ खंडों में प्रकाशित हो चुका है।

13. (1) सूरदास को अपनी झोपड़ी जल जाने का दुख नही था। सूरदास के दुश्मन भैंरे ने उसकी झोपड़ी में आग लगा दी थी। और वे उसकी जीवन भर की जमा पुंजी भी ठगकर ले गया था। उसने ऐसा फसलिया किया था क्योंकि भैंरे की



पूनी सुभागी उससे लड़कर सूरदास की झोपड़ी में बहने आ गई थी, इससे लिरु वैरी उसे सबक सिखाना चाहता था, इसलिये उसने ऐसा किया। सूरदास की झोपड़ी जल जाने का कतना दुःख नही था, जितना की जमा पुंजी के नष्ट हो जाने का था। वे इससे कई योजनाएँ चूरी करना चाहता था। वे इससे अपने पुत्र का विवाह करवाना चाहता था ताकि वे श्री सुख से दो शरीर खा सकें, वे कुआँ जी बनवाना चाहता था। कन्ही रूपों से उसने मित्रों को पिंडा देने का इतैजाम किया था। परन्तु जमा पुंजी के ना मिलने से उसे अपनी सभी योजनाओं पर पानी फिरते दिख रहा था।

14 प्रश्न/उत्तर

(ख) उत्तर कौइयाँ फूल जल फूल पुष्प हैं इसे कौकाविलि कहते हैं, यह पुष्प जहाँ पर भी गड़ि होते हैं वहाँ पर अपने आप ही उग जाते हैं, रेलवे स्टेशन के किनारे - किनारे इन पुष्पों को आसानी से देखा जा सकता है, यह पुष्प काफी सुंदर होते हैं।

विशेषताएँ :-

1. कौइयाँ के फूल उसी प्रकार उसी तरह प्रतीत होते हैं जैसे सरोवर में खिली हुई चाँदनी हो।
2. शब्द श्रुति में यह फूल अपने आप ही उग जाते हैं।
3. इसकी सुगंध से वातावरण सुगंधित हो जाता है।

(घ) उत्तर आर्यहठ कहानी के आधार पर हम कह सकते हैं की भूपसिंह और शैला ने

विषम परिस्थितियों में भी अपने जीवन को सफल बनाया, भूपसिंह हिमाल की गहरी ऊँचाई पर रहता था, उसने कठिन पहाड़ी इलाके में खेती करना शुरू किया। उन्होंने खेतों को डलवा बनाया ताकि आसानी से खेती की जा सके, परन्तु एक और समस्या यह थी की खेती के लिए पानी कहाँ से आए, एक दिन भूपसिंह और शैला दोनों पहाड़ की उसीम ऊँचाई पर चढ़ गए, उन्होंने वहाँ देखा की एक झरना झूफिन नदी में गिर रहा था, यदि फस झरने को गैर लिया जाता तो पानी की समस्या हल हो सकती थी। परन्तु बीच में एक पहाड़ था जिसे काटा जाना था। फस कार्य के लिए उन्होंने क्वार का महाना चुना जिसमें रात को वर्ष जमती है और दिन में पिघलती है अर्थात् कतनी की धार तेज न हो और कतनी सरल भी नहीं। बड़ी मेहनत के बाद उन्होंने काम का सुख मिला और अपने खेतों में जल संचय की व्यवस्था की। इससे हम कह सकते हैं की शैला और भूपसिंह ने विषम परिस्थितियों में अपनी जीवन की कहानी लिखी।

10.

(1)

समसंग व्याख्या:-

अपने चित्र

लगी हुई।

प्रसंग :- प्रस्तुत गंधर्व हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग-2 से सम्बन्धित है। इसका लेखक लिखी कहानी 'यथा समय तजों में रोजते से' संबंधित है। इसका लेखक

राम विलास शर्मा हैं। कवि कहता है कि यथार्थ मनुष्य का एक अंतिम सत्य है उसे बिना किसी संदेह के उसे स्वीकार करना होगा।

ग्याख्या :- कवि कहता है कि मनुष्य को यथार्थवादी बनना आवश्यक है क्योंकि यथार्थ के बिना उसका जीवन एक असत्य बनकर ही रह जाएगा। कवि प्रजापति की स्थिति बहुत गंभीर है, वह वर्तमान के यथार्थ से अलि-छाँति परिचित है, वे वर्तमान के यथार्थ को स्वीकार करके आविष्य की क्षितिज की कल्पना कर रहा है।

विशेष :- 1. कवि ने वर्तमान के यथार्थ और आविष्य के क्षितिज की गहरी कल्पना की है।

2. चमकीले और चरित्र में अनुप्रास अलंकार हैं।

3. भाषा सहज और सरल है तथा समझने योग्य है।

